श्याम सुन्दर श्रीवास्तव 'कोमल'

अमृत वेला का सुख

आज सुबह जब जल्दी जागा
देखा पंछी चहक रहे हैं ।
डोल रही है हवा सुहानी,
खिले फूल सब महक रहे हैं ।

चमक रही हैं मोती जैसी
सुबह ओस की नन्हीं बूंदें ।
बाबा प्रातः बन्दन करते,
हाथ जोड़ कर आँखें मूंदें ।

पूरब में लाली सी छायी
आसमान था बिल्कुल नीला ।
नदिया में सूरज की किरणें,
बिखर गया ज्यों सोना पीला ।

मन प्रसन्न हो गया हमारा,
सुबह - सुबह हम जल्दी जागे ।
अमृत वेला का सुख पाते,
जो जल्दी उठ आलस त्यागे ।

फुर्र - फुर्र उड़ जाती हो

कहाँ चली गौरैया रानी,
पास हमारे आओ तुम ।
दाने चुग कर ओ गौरैया !,
पानी तो पी जाओ तुम ।

देखो तो तुम जरा ध्यान से,
खाने को कुछ दाने हैं ।
और तुम्हीं को चिड़िया रानी,
दाने चुगने खाने हैं।

ठंडा-ठंडा पानी भी है,
पीकर कुछ सुस्ताओ तुम ।
कुछ मेरी भी सुन लो आकर,
कुछ अपनी कह जाओ तुम ।

नन्हे-नन्हे पंख तुम्हारे,
फुर्र-फुर्र उड़ जाती हो ।
कहाँ घूम कर आ जाती हो,
हमें नहीं बतलाती हो ।

फुदक-फुदक कर ओ गौरैया !,
नाच मुझे दिखला दो तुम ।
अब कब आओगी तुम घर में,
बस इतना बतला दो तुम ।

 ISSN:2583-8849